© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 02 | January - March 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

वर्तमान में नारी सशक्त होकर भी असहाय क्यों?

सुनीता रानी, शोधार्थी एन.आई.आई.एल.एम. विश्वविद्यालय कैथल (हरियाणा)

ISSN : 2278-6848 03
9 772278 684800
© International Journal for Research Publication and Seminar

वैदिक साहित्य, धर्मग्रन्थों और भारतीय संस्कृति में स्त्री को पुरूष की अर्धांगिनी माना गया है तथा भारतीय साहित्य में स्त्री के लिए नारी, वामा, सुन्दरी, प्रमदा, ललना, अबला, माता, देवी, महिला आदि शब्दों का उल्लेख किया गया है।

स्त्री कितनी है सशक्त आदि शक्ति को पूजने वाले भारत में शक्तिपुंज के रूप में स्थापित हो चुकी है आम महिला, लेकिन प्रश्न यह है कि आज भी पूर्वागह से क्यों ग्रस्त है पुरूष मानसिकता? यह सत्य है कि 'हम' आज भी पूर्वाग्रही सोच से ग्रस्त हैं, तथा हमारी मानसिकता में आज महिला के प्रति अनेक प्रकार के विकार उदयीमान हैं।

नारी को सशक्त बनाने के लिए जो भी अवसर उपलब्ध करवायें जायें अति आवश्यक हैं उन्हें सामाजिक स्वीकृति मिले, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हो पा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि सामाजिक मान्यताओं, अवधारणाओं और क्रियात्मकता को शक्ति के साथ जोड़कर देखा जाये। पुरूष और स्त्री की सामाजिक स्थिति में अन्तर के कारण हमारी पुरातन, धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं में ही छिपे हैं। भारतीय परम्परा में जैविक एवं लैंगिक अन्तर के आधार पर स्त्री–पुरूष में अन्तर किया गया है और यही अन्तर जीवन के लगभग सभी पक्षों में स्पष्ट रूप से दिखता है।

स्त्री सशक्तिकरण के महत्व को आज कोई भी नकार नहीं सकता और शायद इसीलिए प्रतिदिन स्त्री सशक्तिकरण का शोर है। लेकिन केवल भाषण देने और सेमिनार आयोजित करने से ही स्थिति बदलने वाली नहीं है। आवश्यकता है दृढ़ इच्छा शक्ति की और प्रभावी कदमों की। वर्तमान में सरकार की कुम्भकर्णी नींद अब टूट चुकी है और सभी कार्यक्रमों व योजनाओ का घोषित–अघोषित लक्ष्य अब स्त्री सशक्तिकरण ही है।

बीसवीं शताब्दी का पहला दशक महिला शक्ति के जय घोष का दशक था। शताब्दी के दूसरे दशक में महिला समाज ने उपलब्धियों के नये और महत्वपूर्ण आयाम तय किये। तृतीय दशक में महिला अपने तमाम बंधनों से मुक्त होकर सफलता के शिखर तक पहुँच चुकी थी। बीसवीं शताब्दी का चौथा दशक भारतीय महिलाओं की देशभक्ति के चरम उत्कष और प्रदर्शन का था। सदी का सातवां दशक महिला एवं पुरूष के अधिकारों की समानता प्राप्ति हेतु आन्दोलन का रहा। बीसवीं

Note :For Complete paper/article please contact us info@jrps.in

Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper